

DPN6100

Title : नवमिया पूजाविधि NAVAMIYĀ PŪJĀVIDHI

Run. No. 6791

Cat. No. 110

Micro. No.

Subject Ritual

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

Size in cms. 18x8

Folios 16

Lines (in a page) 6

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

पशुपतिमान पःमाय, जगति, रत्नप

Date: NS / SS / VS / KS 957

Ruler / place

Paśupati mān Pahmāy

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyāsaphu / only PhotoCopy

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

* श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ नवमिया पूजाविधि ॥ ॥ पूजा जपेगु पोतासन त्रिकोण चोयाओ
देओने कुंभ तये ॥

□ श्रीसम्बता. पलयाउगे कृष्ण पितृहयाउगे नन्दीन लउगेह्याय ॥ चक्रवर्षण याय ॥ वलि ध्वय ॥
स्कांनेकपादुकां निस्ते नित्यमाय ॥ शुभ ॥ सं. ९५७ मार्गव ८ सिध जुल ॥

श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ नवमिया पूजा विधि ॥ पूजा जप गु
णात्मन प्रिका धवाया ॐ नमो रतय दूने धून नत को नका ॥ पू
जा जपि ॐ नकी न निष्क सया वति सिन्या सया क ॥ अर्घ पात्र स्व
धन याया न किने न की र सने यो द दूने तये का ॐ नम तथ न ॥ मंगु ॥
ह ॥ स ॥ कुल की र र का न काय स्वाहा ॥ वं क्री ७ ख ६ ३ सी र ती म सी ष
ज स म ग र वी श्री पूनी त मा हा पा यं पी य स ज स म त य ही ॥ नम य म

सिद्धिस्तुवाने॥ कसंदलपूष्यराजनसमर्पयामी॥ न्यासलिका
 य॥ श्रीसर्वतांगानाडाकुंतदनेयना॥ अथमूलसूत्रायायविधि
 द्वायाक्रोडाभवालास्नानकवाकसलिसहितयाक्रोडाकलस
 मगय॥ डासजालाक्रस्वनसुंकाजवायाडागय॥ षडाससिध
 लसहितनसिधलसूतगय॥ देवतासकलयातंजजमकाचने
 डालतय॥ पंचवलिकावदचनेडालडासगय॥ दयकरुकी

सासग्रीदयकाडापूजायाया॥ नासिया॥ वतिसिन्यासयाया॥ त्रिख
 या॥ (थं) अर्घ्यपात्र॥ सं० अर्घ्यपूजा॥ स्नान॥ पंचामृतस्नान॥ गथ॥ पंच
 दिपयसा॥ पञ्चवृक्षातिवासित॥ पंचद्रव्यसमायुक्तं॥ पंचामृतस्ना
 पयाम्पही॥ लक्षण॥ स्नापिता॥ स्नापितमने॥ सृष्टीतागुणिवाक्य
 ॥ तस्मात्वाङ्गतनाथत्वाभ्यामिवाक्य॥ अलिस्नानंनमः॥ स
 धिअर्घ्यपात्रसूनाडाहाय॥ सूनासकैभियामास॥ तत्समीत्याज

नूतमी अद्वि सिद्धि वृत्तं न्य अलिप्ता गोदा मय हो अतः स्नान विधिः
 सदा यार्थं चन्दन सिंदूर स्नान काय वाक डर्थी ॥ नाभिय ॥ संध्या
 लेषन सूर्य सा चिथभया ॥ अश्रकाया ड ॥ एभय पाललाक यो नाभका
 या ड ॥ श्री स्वष्ट्र देवगा प्रीति नवमी महा पार्वन्य पंचाय चान पूजा क
 तुंभी कून मातं दह नवाय जाँ किं संधी सूर्याय अर्घ्य नमः पूर्य नमः ॥
 सदा यार्थं आत्म पूजा गोयाया ॥ मह निरुया ॥ जानि मदान स्नान जा

दा ड ॥ मालनी पलया ड ॥ दडा या क गया ॥ पंचवलि का गण ग्य द
 जा स गया ॥ मय ना सनाय ३ ॥ नगा सनाय ३ ॥ भगा सनाय ३ ॥ प्रगा स
 नाय ३ ॥ मखा सनाय ३ ॥ जेगी श्री कौ कूल पप्रव पूक नाथभय ॥ देव
 ली ॥ कौ की कू दगुपालाय ॥ देवली ॥ यों यी यूं सर्व या गिनी ला
 ॥ देवली ॥ हूं श्री सिद्धि वासुदेवाय ॥ देवली ॥ गंभी गूं ॥ लो श्री
 कूला ॥ हो ध्या ॥ य ॥ देवली ॥ आवाहनादि ॥ दह गर्जनि विन्दु ॥

शानि गजसुदीर्घया॥ धूप दीप नेत्रद्वय॥ जाय॥ श्री कौं स्वाहा
 १० कौं स्वाहा १० कौं स्वाहा १० सुं स्वाहा १० लो स्वाहा १० इयं गहन स्वाहा
 ॥ श्रीय ॥ ॥ मेर्या पूर्ण कुमार ग ॥ गन स द स क य प यो गिनी च वा सु द्धे
 च छे नू पा द्रु नि ग र य ह या वि द्यु हा न ग ॥ ६ ॥ पूषा ध्रु प दी पा मिष
 म ध्रु व लि लि न र्चि तं ह वि ता गी च कु र्म र क काना इ नि ग र य ह र्ज र कि
 म कि पु दा गा ॥ ॥ मूल स ॥ श्री धन ग ल्क य ॥ श्री नी गा स ना ये न म ॥ स्त

जामनाय ॥ नयामनाय ॥ पनामनाय ॥ कसामनाय ॥ कर्दिका स
 नाय ॥ पनामनाय ॥ बुध प्रतामनाय ॥ विक्रुप्रतामनाय ॥ नू प्र
 प्रतामनाय ॥ ६ ॥ धन प्रतामनाय ॥ सदा भिव प्रतामनाय ॥ वषा
 मनाय ॥ सिंहामनाय ॥ हं निर्न जन के मला मनाय ॥ ॥ ध्या न ॥
 वष र्म स्थि तं दे वी स्व वर्ध नू प ॥ भ ति गं ॥ न के व कं गि ने र्ग च ॥ रु जा
 सा द भ धि नि ॥ उ म नू य र्ग वा र्ध च ॥ वा मे ख त्वा इ म र ली च ध नू रू ल

कपालविधमं च नृरय रयनासुनं पदनवधितं ज्ञानं वा मा नृस्था च
 देवकी नृकवकापिते पां च नृरय वधवर्धवर्धितां विरुजावनदा
 कौं सिंहस्था रयस्य सुनाना रने दक्षमता वा सलक्ष्मलदितां ॥
 नवानन्दनृपायै अष्टाष्टपकीर्तिताः ॥ उर्वध्यात्मा महादविः किपु
 सिद्धिं गिमानवा ॥ ध्यानपूर्व्यं नमः ॥ गमयती कृत्तिकाया ॥ देया जडा
 धानगुथीर्कजा सवलि विद्या ॥ उर्वध्यायै ह्रीं त्यादि वलिं गहिं स्वाहा

वज्रकृत्तिनित्यादि वलिं गहिं स्वाहा ॥ नमो गवती त्यादि वलिं ॥ उर्वध्यायै
 ॥ आनन्दनृपायै कित्यादि ॥ मल्लपश्चिममल्लस्थान त्यादि वलिं ॥ उर्वध्यायै
 ॥ आनन्दनृपायै कित्यादि ॥ हल्लपश्चिममल्ल त्यादि वलिं ॥ उर्वध्यायै ॥ मल्ल
 नृपायै कित्यादि ॥ नवानन्दनृपायै महाविद्याना अष्टाष्टपि मल्लपश्चिममल्लस्थान
 रदानकायै भिवण कित्यादि ॥ यमी ३ पूजयामि ॥ वलिं ॥ हृदयादि वलिं
 ॥ आवाहनादि ॥ ध्याति ॥ साधनया यगुत्तर्पना ॥ प्रतपता मनस्य

त्यादि॥ नाथवियाडाहृद्विलिप्तगया॥ ॥ श्रीसम्भगान्त्रावाहनयाया॥
 ॐ ह्रीं आवाहयिष्ये आवाहयामि नमः॥ अलूननकमदुल आदिदेवपा
 दूकी॥ वलि॥ धनसूदा॥ ॥ कलसपूजा॥ जै॥ आभनादिअष्टपुष्टिकाः
 स्त्रायश्री३॥ वषास्त्राय३॥ ध्यान॥ जै॥ मुद्रास्तुतिकर्मासं विनर्तचक्षु
 लितावनदाख्यहस्तधूमसुमालाधर्नहर्नः॥ उर्वध्यात्वा महादेवमिष्टका
 मार्यसिद्धिदध्यानपूर्व्यनमः॥ ॐ ह्रीं सः मल्लजयाय अमृताश्वनमहादेव

वाय अमृतामहालक्ष्मीस्तुक्तिमहिताय नमः ॐ पादूकां३॥ षडंगनप
 जा॥ वलि॥ आवाहनादि॥ धनसूदा॥ जप॥ ॐ ह्रीं सः स्वाहा१०॥ काय॥
 हस्तसीता॥ ॥ हागनपूजा॥ मल्लद्विडमायनय३॥ वलि॥ आवाहनादि
 ॥ धनसूदा॥ ॥ डालाकस्तनपूजा॥ पू॥ पूर्णचंद्रायनमः॥ वलि॥ ॥ सिध
 मं पूजा॥ श्रीसर्वलक्ष्मीनमः॥ वलि॥ ॥ कस्तपूजा॥ आभनादिअष्टपुष्टि
 कास्त्रायश्री३॥ जै॥ कोनासनाय३॥ धन॥ लाकाजगनितादिविपन्नगसमः

ह॥ सु॥ श्री॥ ङा॥ षडिकर्मरदानकाय॥ वलि॥ आवाहनादि॥ यानि मू० ॥
 श्रीक० षडपूजा॥ वृषासनाय॥ सिंहसनाय॥ ह॥ अनन्दसक्त्यादि॥ सु॥ श्रीक०
 षडनाथस्वसक्तिमहिताय॥ वलि॥ आवाहनादि॥ (धन० यानि॥) ॥ मातृ
 कापूजा॥ बुद्ध्यादि॥ यानि मू० ॥ ॥ स्वर्गद० नवपूजा॥ ॥
 वृषासनाय॥ नैकी० श्री० कुं० ह्रीं० क्लीं० कुं० ह्रीं० क्लीं० ह्रीं० सिं० वा० सु० न० मा० हा० ले० न० वा० य० श्री०
 पू॥ वलि॥ आवाहनादि॥ वज्र० ले० मू० ॥ ॥ उग्रच० षडपूजा॥ आध्यात्म० अष्ट

पृष्टिकासनाय॥ भुक्तनिष्ठममहिषासनाय॥ सिंहसनाय॥ कुं० कीं० न०
 ज० य० दे० ह्रीं० उग्रच० षडपूजा० म० दि० हि० ह्रीं० कुं० स० द० न० क० र० त्वां० मां० सं० म० त्वां० ह०
 स्वाहा० श्री० ॥ पू॥ वलि॥ ह॥ श्री० उग्रच० षडपूजा० रदानकाय० श्री० पू॥ वलि॥ आ
 वाहनादि० यानि॥ वागीश्वरिपूजा॥ यन्मासनाय॥ नैकी० लिंगछि० पिंगछि० क०
 टक० षडवागीश्वरिब्रह्ममहंतानिकाविश्वेश्वरी० पू॥ वलि॥ आवाहा० यानि॥ ॥
 कर्मपूजा॥ आध्यात्म० काय० ॥ अनन्ता० स्नाय० ॥ स्कन्दा० स्नाय० ॥ यन्मासनाय०

कंसास्त्राय ३॥ कर्णिकास्त्राय ३॥ वृषास्त्राय ३॥ सिंहास्त्राय ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 वृंक्षविष्कृत्तु ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 लाङ्गनसमप्रकाशकीरूपावकादनी ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥ वृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 ह॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 मृषास्त्रह॥ कर्मदयाध्वनपूर्य॥ गमययी॥ कींकीनकामिनीविप्रहचिलगाधी
 महतनोक्कृतिप्रवादया॥ उँ ३ ह॥ श्रानन्दसुकित्यादिस्त्रीमिवसुकिर्त्त

यागमन्त्रीकर्ममर्त्ययन्त्रीकामकलाद्वेष्टीशृणावलिं॥ उँ ३ ह॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 तिकर्ममर्त्ययन्त्री॥ वलिं॥ उँ ३ ह॥ श्रानन्दसुकिर्त्तु ३॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 लिं॥ उँ ३ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥ वलिं॥ उँ ३ ह॥ श्रृंक्षविष्कृत्तु ३॥
 रगवतीवलिं॥ हृदयोदिपूजा॥ वलिं॥ श्रवाहना॥ ध्वनयानि॥ ॥ प्रियवदुमापू
 जा॥ वृष्मासनाय ३॥ उँ ३ ह॥ नृपखद्युमाखद्युमेदुलखद्युप्रियवदुमापू
 नकायन्त्रीशृणा॥ मायाद्विपूजा॥ पद्मासनाय ३॥ उँ ३ ह॥ श्रीमायाद्वीर

राजकाये श्री ३५॥ वलि॥ आवाहन॥ ॥षट्पदापदा प्रगाल्नाय ३॥ हए सए
 श्री ३५॥ वलि॥ आवाहा आनि॥ ॥थडसिलसप्रजा॥ आभनभकयनमः॥
 अननालाय २॥ सुदा लाय २॥ नना लाय २॥ पया लाय २॥ कंभ लाय २॥ क
 रिका लाय २॥ पया लाय २॥ बुंभ प्रता ३॥ विप्र प्रता ३॥ नूद प्रता ३॥ ६० ॥
 न प्रता ३॥ सदा भिव प्रता ३॥ रघा लाय ३॥ सिंह लाय ३॥ की निर्जनेकमेला
 लाय ३॥ ध्मना वषर सस्थि गंदवं खवर्ध नूपलभतिगा॥ एकवकुं प्रिनयंचर

जाष्टा दगा धजिनी॥ उम नूपर्षुवा दी चखड्म मू सवडकं॥ ॥मंचवी नावा दी चव
 नदारय ददि (६॥) वा मिषत्वांगरुलेच धनरुलके पाभकं॥ ॥यं भकपालवीनी
 च अरय रयना सनी॥ पदनवधि गंजानू वाभा नृस्था चंदवकी॥ एकवकुं प्रि
 नया च अरु (६॥) भवर्ध वधिगां॥ विरुजा वनदा दकी सिंहस्था रयसव्यस॥ ना
 नारजदा रभरा धां सलदा (६॥) धलदिगी॥ रयवान नृपाय अष्टां अष्टपुकी
 तिगा॥ उर्वध्मत्वा महादेवीः क्षिप्र सिद्धांतिमानवा॥ ध्मनपर्वी ३॥ गभयपी॥ क

डिकायेविप्रहकूलदीपायधीमहितनीकडिप्रवादयाता॥ उँ॥ अर्धात्रकाँत्यादि
॥ वलि॥ वडाकूडिनि त्यादि॥ वलि॥ नमो रगवनी त्यादि॥ वलि॥ उँ॥ ह॥ आनन्द
कित्यादि स॥ श्रीपश्चिममलस्थानरदार्काय श्री ३५॥ वलि॥ उँ॥ स॥ आनन्द
ह॥ श्रीपश्चिममलस्थानरदानकाय श्री ३५॥ वलि॥ उँ॥ ह॥ स॥ आनन्द
श्रीमहाविद्यानाम्न श्री ३५॥ ह॥ श्रीपश्चिममलस्थानरदानकाय श्री ३५॥ वलि॥
यश्री ३५॥ वलि॥ हृदयादिपूजा॥ वलि॥ आवाहना॥ आनि॥ षष्ठजकिनी॥ उँ॥ जाकि

नीशनाँनारलौलारकाँकारसौंसारहौंसारषष्ठजकिनि त्या श्री ३५॥ आवा॥ आनि॥ गि
पूजसुंदरिपूजा॥ नकपप्राप्तनाय उँ॥ की॥ श्रीवालापिपूजसुंदरी श्री ३५॥ उँ॥ की॥
रुतश्री ३५॥ नादये श्री ३५॥ वलि॥ गुफकाली॥ प्रतापनाय उँ॥ की॥ गुफकाली
ये श्री ३५॥ वलि॥ आवा॥ आनि॥ माहाप्रायतापनाय उँ॥ श्रीमहाप्रायदानका
य श्री ३५॥ वलि॥ आनि॥ हनुमाना महाप्रायतापनाय उँ॥ की॥ की॥ कोँसाहारी हनुमे

॥ १ ॥ न कवर्धयि न पुंच वायु पूयं महावले ॥ सुदुर्लभं यूपीति हनुमान न मस्तु
 ॥ २ ॥ वनालय मूढा ॥ निर्वीर्य राजा ॥ नासि यशः कौं अस्तु यन्मासयाय ॥ निजं कृते
 कमला स्नाय ॥ ३ ॥ ॥ निजं कृते नितरा काना दितरा कूलनायका ॥ उकय कुमहा
 द किपिने वाच न स वना ॥ स्थल नृपा प्रिया प्रका वन दारय नासिनी ॥ ४ ॥ ॥ अनपद्यं शागप
 ॥ ५ ॥ निजं कृताया ॥ उँग सुगुला क म नू च न मां कृ णि श्री ३ ॥ वलि ॥ कौं कौं कौं कौं श्री ३ ॥
 ॥ ६ ॥ ॥ वलि ॥ उँग कवर्ध काम ॥ ७ ॥ ॥ वियूल पल गी य स्य पी ॥ ८ ॥ ॥ जय र्पी ॥ ९ ॥ ॥ मध्य पी ॥

॥ १ ॥ विपुला गति पूता गुग सिंहांत गमनां ॥ आचार्य सिद्धि संधा षष्टि व त व न त म श्री या मि न्य व
 न ॥ २ ॥ ॥ कं हत्य कं व दल क स ह जा ॥ देव देवी न मा मि श्री ३ ॥ वलि ॥ आवा हा ॥ या नि मू ॥
 ॥ ३ ॥ ॥ ता क म हा व लि ॥ कौं कौं कौं कृ प पा ला य व लि ॥ यौ यौ यौ श्री सिद्धि या मि त्था ॥ ४ ॥ ॥ श्री सिद्धि
 चामुद्रा यी ॥ उँग म हा क न वी न म ग म ना धि प त य ॥ सर्व त्व नृ का स चानि त्वा ॥ ५ ॥ ॥ सर्व त्व स्व
 ॥ ६ ॥ ॥ सर्व त्व ना क स त्वा ॥ सर्व त्व य क त्वा ॥ सर्व त्व कि न्न त्वा ॥ सर्व त्व ना र ग त्वा ॥ सर्व त्व नृ
 ॥ ७ ॥ ॥ देव त्वा म म ह्नि त य ग म प्र र्थ ॥ ८ ॥ ॥ देव लि र ग हं त्वा हा ॥ ९ ॥ ॥ म म प पी ॥ १० ॥ ॥ सि हा स न पी ॥ ११ ॥

पं पायादयंगद्यपि सकलार्थदाता ॥ कुं काजान् त्यापादाहसकमलतडा बादयश्चानिलिगं
यायूयाष्टौडिनौकः शसिस्तकलकलाविदूनादार्चयुक्तं ॥ निर्जङ्गमैबूधनामसुयनमकलालेन
वासंयमर्तिपायादधानवात्मा सकलगुरुवर्जलेन वंशीकूडभा ॥ बुंभाहीकमलंदसोमत्वादि
॥ स्यामानकायिनेग्रात्यादि ॥ उंकाजामातूजौ वज्रपधायनिस्त्रिगौ ॥ षत्पुकाजगतादवीथीकू
डिकाष्टनमामि ॥ कुं काजभीताननयानिचक्रं कालेकषट्कहृत्सुहृत्सवीजं ॥ तजधिपाधिर्गा
॥ धर्मादं कूडभ्वनंतप्रधामिनित्यं ॥ आबुंमस्तंरुपयंतमर्तिमर्तिपुरुदगः ॥ त्रयाया
फसहसादि कसतांपयमभ्यनि ॥ कमस्तदवदधमिकूडिकेयनमस्वनि ॥ तवपादौवूडति

त्यं निश्चलात्किंचसुम ॥ अपराधसहस्रभधिक्रियतर्हति संमया ॥ दासाहमितिमांनत्वा कम
त्यपयमवधनी ॥ जथवाद्यप्रहाराधर्मत्यादि ॥ एजाजप्रमथानामडा साहिनाकायाडो
पश्चिमक्षेत्राक्षरमाहंमायास्व ॥ ददवताकूडिकाप्रीतिनवमीपार्वत्यपेक्षापवात्र
जासंपूर्ध्वार्थं अगतांधप्रसाधपदीयपूजाविधमनीरुसर्वविधिपविष्टीमस्तु ॥ पा
पीहपोपकर्माहं पायास्तोपापसंरवा ॥ गोहिमांदवदधमिस्तर्वपापहारात्वा ॥ अन्य
मजघीनास्मिन्त्वमेवमजघीममा ॥ तस्मात्कायेष्टीलावननकरयनमभ्यनि ॥ आवाह
नंनजानामि नजानामिविर्जनां ॥ एजाचेवनजानामि कमस्तपयनमस्वनि ॥ ॥ तर्पण ॥ अ

॥ सुं एजा मार्गव द मिधेडोल

ॐ कालं पलपाडा ७

प्राविंसगित्यादि। त्वामन्दापज्ञानित्ययाथ्य॥ सुकस्यानंदडा। जपे ॥ दयस्तुचित् सिधल मा
हनि। सागहनकृया॥ श्रीषदं त्यादि। वीनस्तनित्यादि। मिहर्तकाससिद्धि संतोशाकजलंतथमः
मंजलं च कृमोलागभाहर्तदृष्टिदायकं॥ दध्मकृतसमाशकं॥ तिलकं जतु केनाम्यहं॥ सर्वम
लाभदं चैवल श्रीनाईदरातिचा॥ नानापुष्यत्यादि॥ स्वान् सिधमं॥ जालाक्रस्नन काकाया
कागलसगयः कलसहयाडा न किर्तनिस्यं लषवियाडा कलस जालाक्रस्नन थकालिविय
सिधलमं न किर्तनिय थकालिं जालाक्रस्नन कृक पूर्णचन्दनं त्यादि॥ भमंदलदयाकाडा
हय्यसा विधनय॥ सिधमं कागलसग जालाक्रस्नन कलस फापायाथ संगया॥ न किर्तनिस्यं
चि स्वानविय॥ श्रीसन्वगा पलपाडा कृन्त पितहयाडा न कीन नडा जाया॥ चक्रतर्पदायाय

ॐ कालं पलपाडा ७